शोध मंथन Vol. XVII No.2 Apr.- June. 2026 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.889 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.043

चुनावी समयावधि में मतदाताओं का व्यवहारः एक राजनीतिक विश्लेषण

प्राप्तिः 11.05.2026
स्वीकृतः 13.06.2026

43

शोभारानी मलाकी
शोधार्थी, (राजनीति विज्ञान विभाग)
कलिंगा विश्वविद्यालय,
नया रायपुर (छ.ग.)
ईमेलः *shobhamalaki98@gmail.com*

डॉ अनिता सामल
शोध निर्देशक, (राजनीति विज्ञान विभाग)
कलिंगा विश्वविद्यालय
नया रायपुर (छ.ग.)

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में छत्तीसगढ़ राज्य के बेमेतरा जिले के अंतर्गत 03 विधानसभा क्षेत्र (बेमेतरा, नवागढ़ व साजा) के वर्ष 2018 से 2023 में हुए विधानसभा चुनाव का राजनीतिक दृष्टिकोण से विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। तीनों विधानसभा में से नवागढ़ विधानसभा अनुसूचित जाति वर्ग के लिए आरक्षित है, जबकि बेमेतरा एवं साजा विधानसभा अनारक्षित सीट है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा प्रत्येक विधानसभा से 100–100 उत्तरदाताओं तथा 15 राजनीतिक विश्लेषकों के विचारों का समावेश किया गया है। शोध पत्र में प्राथमिक आंकड़ों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची की सहायता से किया गया है, वहीं राज्य निर्वाचन आयोग, छत्तीसगढ़ एवं जिला निर्वाचन कार्यालय, बेमेतरा, व स्थानीय समाचार पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित तथ्यों के साथ–साथ स्थानीय संवाददाताओं की सहायता द्वितीयक आंकड़ों का संकलन किया गया है। तत्पश्चात् प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण एवं समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि जिले के तीनों विधानसभा में चुनावी समयावधि में मतदाताओं का व्यवहार में एकरूपता पायी गयी तथा प्रमुख राजनीतिक दल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एवं भारतीय जनता पार्टी का प्रभाव सबसे अधिक रहा है, साथ ही स्थानीय राजनीतिक दल छत्तीसगढ़ जनता कांग्रेस पार्टी जिसे जोगी कांग्रेस पार्टी के नाम से स्थानीय लोग जानते हैं, का प्रभाव क्षेत्र के मतदाताओं के व्यवहार पर भी पड़ा है। वर्ष 2018 में तीनों विधानसभा में कांग्रेस वहीं 2023 में विधानसभा में भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी विजयी रहे हैं। मतदाताओं ने स्थानीय समस्याओं के स्थान पर लोकप्रिय राजनीतिक दलों को ध्यान में रखते हुए मतदान किए हैं। वहीं 2023 में साजा विधानसभा क्षेत्र के चुनाव में प्रमुख रूप से धार्मिक–सामाजिक एवं जातीय प्रधान रहा है। इससे स्पष्ट है कि चुनाव में भावनाएँ भी मतदान को प्रभावित करते हैं।

मुख्य शब्द

मतदाता व्यवहार, राजनीतिक दल, लोकतंत्र व मतदाता, निर्वाचन प्रणाली, राजनीतिक मूल्य।

प्रस्तावना

किसी भी लोकतांत्रिक देश में शासन तंत्र के चुनाव में जनता की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, वहीं चुनाव में समय प्रत्याशियों द्वारा जनता को अपने पक्ष में मतदान करने के लिए अनेक प्रकार से मतदाताओं को आकर्षित करते हैं। ऐसे में मतदाताओं को सही प्रत्याशी के चुनाव करने में कठिनाई हो सकती है। ''चुनाव के अध्ययन एवं परीक्षण से मतदाताओं के एक समूह के व्यवहार और रूझान की तुलना में मतदाताओं के वोटों में अंतर के लिए उत्तरदायी कारक कौन से हैं? तो उसके परिणाम के लिए उत्तरदायी कारक और चुनाव की विशेषताओं की कुंजी को समग्र रूप से समझ सकते हैं (कर्टिस, 2000)। पैनल डिजाइन में कई व्यवहारिक समस्याएँ और मुश्किले हैं, लेकिन इसका लाभ यह है कि इसमें साक्षात्कार देने वाले को यह याद रहने की संभावना बहुत कम होती है कि उसने पिछले चुनाव में किस प्रकार का रूझान या मत अभिव्यक्त किया था और इस प्रकार हमें मतदान व्यवहार की अस्थिरता अधिक विश्वसनीय अनुमान होता है (हिम्मेलवेट एवं अन्य, 1978)। राजनीतिक व्यवहार और मतदान–व्यवहार के अध्ययन में अगर कुछ भिन्नता है तो वह व्यवहार के सिद्धांत या मात्रा के कारण नहीं है। इसके बजाय, यह भिन्नता उन संदर्भों की वजह से है जिनमें किसी व्यक्ति के व्यवहार का परीक्षण किया जा रहा है, जैसे– सरकारी संस्थानों के संदर्भ में व्यवहार का परीक्षण किया जाना (एल्डर्सवेल्ड, 1951)। विभिन्न अकादमिक विशयों के लिए मतदान–व्यवहार और रुझान को मापने का मतलब अलग–अलग है और वे एक–दूसरे से अलग कारकों की छानबीन और संकलन करते हैं। समाज वैज्ञानिक या सामाजिक–सांदर्भिक उपागम उस सामाजिक परिवेष पर बल देते हैं जिसमें कोई व्यक्ति या मतदाता कार्य करता है और जिससे उसका मतदान–व्यवहार प्रभावित होता है (जॉनसन एवं अन्य, 1999)। राजनीति के सांदर्भिक सिद्धांत नागरिकों की व्यक्तिगत क्रियाओं को व्यक्तिगत स्तर पर परिभाशित की गयी परिस्थितियों के आपसी संबंध के रूप में समझा जाना चाहिए (हकफेल्ड एवं स्प्रेग, 1993)। इस प्रकार व्यक्ति का व्यक्तिगत व्यवहार, व्यक्तिगत विषेशताओं के समुच्चय से बने पर्यावरण पर निर्भर करता है। ''कोई सिद्धांत सांदर्भिक तब होता है जब कुछ व्यक्तिगत विषेशताओं के समुच्चय (जैसे औसत आय, औसत उम्र इत्यादि) में होने वाले परिवर्तन के कारण उन व्यक्तियों के व्यवहार में भी परिवर्तन दिखायी देने लगता है जो उन विषेशताओं के समुच्चय को साझा करते हैं (हकफेल्ड एवं स्प्रेग, 1993)।''

इस प्रकार लोकतंत्र में चुनाव के समय प्रत्याशी राजनीतिक दलों द्वारा मतदाताओं को अपने पक्ष में मतदान हेतु आकर्षित करने का प्रयास करते हैं। ''राजनीति में आर्थिक स्थिति की सुदृढ़ता अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। अंतः इलॉइट वर्ग/सम्पन्न वर्ग मतदाताओं के राजनीतिक विचार, मूल्य और निर्णयन में स्वायत्ता अधिक होती है, जबकि मध्यम एवं निम्न आय वर्ग में के मत जाति, ध ार्म व भावनाओं से सर्वाधिक प्रभावित होते हैं (खीचड़, 2026)।''

शोध साहित्य का पुनरावलोकन

मंडल, एल. के. (2023) ने ''भारत में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन'' अपने शोध पत्र में बताया कि भारतीय राजनीति में जाति, धर्म, भाषा और लिंग बहुत मायने रखते हैं। ये चुनाव को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। चुनावों में भी ये कारक

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.043

मतदान व्यवहार के प्रमुख निर्धारक होते हैं, किन्तु ये कारक तब बहुत अधिक प्रभावशाली हो जाते हैं जब ये लोगों की आर्थिक आवश्यकताओं से जुड़ जाते हैं। भारत में कई प्रकार के चुनावी अध्ययन में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले प्रत्यक्ष कारक है।

कुमारी, एन. (2023) ने ''भारत में मतदान व्यवहार का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण'' अपने अध्ययन में पाया कि मतदाताओं के व्यवहार को समझने के लिए सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं की समीक्षा करने पर बल दिया। वहीं कई मामलों में मतदाताओं को गुमराह होते हैं। भारत में पुनर्निर्वाचन की दर काफी कम हो गई है। अब भारतीय मतदाता नेताओं के काम और करिश्माई नेतष्त्व को देखते हुए मतदान करते हैं।

कुमारी, एम. (2017) ने ''भारत में चुनाव एवं मतदान व्यवहार'' अपने अध्ययन में पाया कि भारतीय निर्वाचन प्रणाली और मतदान व्यवहार के हर क्षेत्र में परिवर्तन के चिन्ह देखे जा सकते हैं। इस परिवर्तन को सतत् व स्थायी बनाने के लिए अधिक प्रयासों और प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। अतः लोकतंत्र की दष्ढ़ता के व्यापक संदर्भ में भारत में चुनाव एवं मतदान व्यवहार में सुधार इस परियोजना के मूल तत्व है। वर्तमान में मतदाताओं को चुनावी लालसा से बचना चाहिए एवं योग्य प्रत्याशी को अपना बहुमूल्य मतदान करना चाहिए।

कुमार, एस. (2013) ने ''भारत में मतदान व्यवहार : अध्ययन का इतिहास और उभरती चुनौतियाँ'' अपने शोध अध्ययन में पाया कि चुनाव के समय में दुनिया की राजनीतिक पार्टियाँ अथवा प्रत्याशी मतदाताओं को अपने पक्ष में मतदान करने के लिए सही–गलत, कानूनी–गैर–कानूनी हथकण्डों को अपनाने से नहीं हिचकते हैं। भारत की सामाजिक–सांस्कृतिक, भौगोलिक और जनसांख्यिकीय विविधाएँ और राजनीति की स्थितियाँ पृथ्क–पृथ्क होने से मतदान व्यवहार के सामने विभिन्न चुनौतियाँ है। स्थानीय मुद्दे की अपेक्षा क्षेत्रीय मुद्दे अधिक प्रभावशाली होती हैं, किन्तु अधिकांश प्रत्याशी उक्त विषयों के साथ विरोध प्रत्याशी को नीचा दिखाने अथवा उसे गलत साबित करने का प्रयास अधिक करते हैं।

शोध अध्ययन का महत्व

लोकतांत्रिक व्यवस्था में मतदाताओं को अपने राजा या शासक चुनने का अधिकार है। ऐसे में यदि प्रत्याशी चुनाव के समय अपने मतदाताओं को विभिन्न प्रकार से लालच, उग्र या भड़काऊ भाषण या जाति या धर्म/समुदाय के नाम पर वोट प्राप्त करने का प्रयास करता है तो मतदाताओं के साथ छलावा होगा। यही कारण है कि मतदाताओं का जागरूक होना अत्यंत आवश्यक हो गया है। यह शोध आगामी लोकसभा, विधानसभा एवं स्थानीय निकायों के चुनाव में मतदाताओं को अच्छे छवि, कर्मठ एवं योग्य प्रत्याशी के चुनाव करने में सहायता होगी। परिणामस्वरूप एक बेहतर समाज व राज्य के विकास कार्यों को प्रगति मिल सके।

अध्ययन के उद्देश्य

1. मतदाताओं की सामाजिक छवि एवं आर्थिक योग्यताओं को ज्ञात करना।
2. मतदाताओं की शैक्षणिक एवं राजनीतिक विचारों को ज्ञात करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक शोध प्रचना व गुणात्मक शोध प्रचना पर आधारित है। इसके लिए प्राथमिक आंकड़े साक्षात्कार अनुसूची एवं द्वितीयक आंकड़ों के लिए शासकीय दस्तावेजों, स्थानीय समचार–पत्र पत्रिकाओं व इंटरनेट पर उपलब्ध अध्ययन सामग्रियों के साथ–साथ जिला निर्वाचन कार्यालय, बेमेतरा से प्राप्त तथ्यों का प्रयोग किया गया है। वहीं उत्तरदाताओं का चयन गैर–आनुपातिक आधार पर 15 मतदान केन्द्रों से कुल 300 उत्तरदाताओं (150 ग्रामीण मतदाता, 150 नगरीय मतदाता) का चयन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

बेमेतरा जिले की स्थापना 1 जनवरी 2012 को दुर्ग जिले से पष्थक कर बनाया गया। वर्तमान समय में तीन विधानसभा (बेमेतरा, साजा व नवागढ़) है। जिला मुख्यालय राष्ट्रीय राजमार्ग 30 से होकर गुजरता है। विधानसभा निर्वाचन 2023 के अनुसार 7 लाख 64 हजार 780 मतदाता है, जिसमें साजा विधानसभा क्षेत्र में 2 लाख 50 हजार 817 मतदाता, बेमेतरा में 2 लाख 47 हजार 202 मतदाता व नवागढ़ में 2 लाख 66 हजार 759 मतदाता हैं। उक्त तीनों में से नवागढ़ विधानसभा क्षेत्र जिले के सबसे बड़ा निर्वाचन क्षेत्र है।

तथ्यों का विश्लेषण

उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति

अपने मत का सही प्रयोग वहीं मतदाता कर सकता है, जो शिक्षित व जागरूक हो। शोधार्थी द्वारा उत्तरदाताओं के शैक्षणिक स्थिति ज्ञात कर अग्रतालिका में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका–01 : उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति

क्र.	शैक्षणिक स्तर	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राथमिक	31	10.33
2.	पूर्व माध्यमिक	65	21.66
3.	10वीं–12वीं	123	41.0
4.	स्नातक	42	14.0
5.	अन्य	39	13.0
	योग	300	100

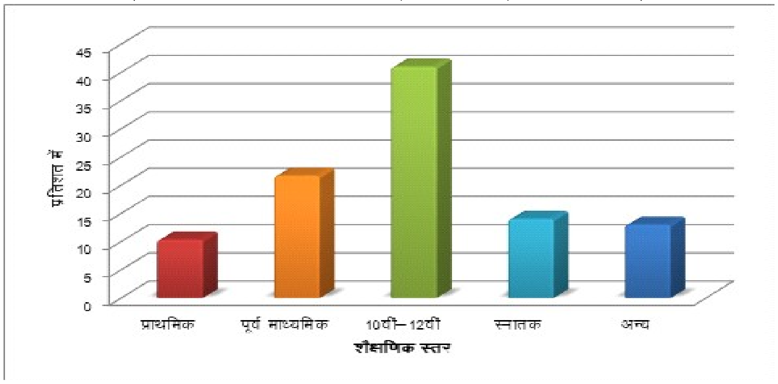

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.043

तालिका व आरेख से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के चयनित उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 41.0 प्रतिशत उत्तरदाता 10वीं–12वीं स्तर तक शिक्षित होने की जानकारी दिए हैं। 21.66 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्व माध्यमिक, 14.0 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक व 13.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अन्य विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा प्राप्त करने की जानकारी दिए हैं, जिनमें कषषि, मेडिकल व संबंधित विषयों में स्नातकोत्तर की शिक्षा प्राप्त किए हैं। वहीं 10.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जानकारी दिए हैं उन्होंने केवल प्राथमिक स्तर तक ही शिक्षा प्राप्त किए हैं। उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है आज भी ग्रामीण एवं नगरी क्षेत्रों में शैक्षणिक सुविधाओं के विस्तार के फलस्वरूप लोगों के शैक्षणिक स्तर में वषद्धि हुई है। जिससे वे अपने हितों को पहचान कर अपने पसंदीदा प्रत्याशियों को अपना मत देने में सक्षम हुए हैं, साथ ही यह भी देखा गया कि ऐसे उत्तरदाता जो निम्न अथवा अल्प स्तर तक शिक्षित है, वे राजनीतिक दलों द्वारा दिए गये प्रलोभनों एवं जाति, धर्म जैसे समीकरणों के कारण क्षणिक सुविधाओं के लिए प्रत्याशियों के चयन जागरूकता का परिचय नहीं दे पा रहे हैं।

तालिका–02 : चुनाव में प्रत्याशियों के चयन में मतदाताओं के विचार/व्यवहार

क्र.	व्यवहार	संख्या	प्रतिशत
1.	प्रत्याशी के आचरण देखकर	47	15.66
2.	प्रत्याशी के शैक्षणिक योग्यता देखकर	57	19.0
3.	प्रत्याशी के राजनीतिक दल देखकर	141	47.0
4.	प्रत्याशी की जाति देखकर	26	8.66
5.	अन्य	29	9.66
योग		300	100

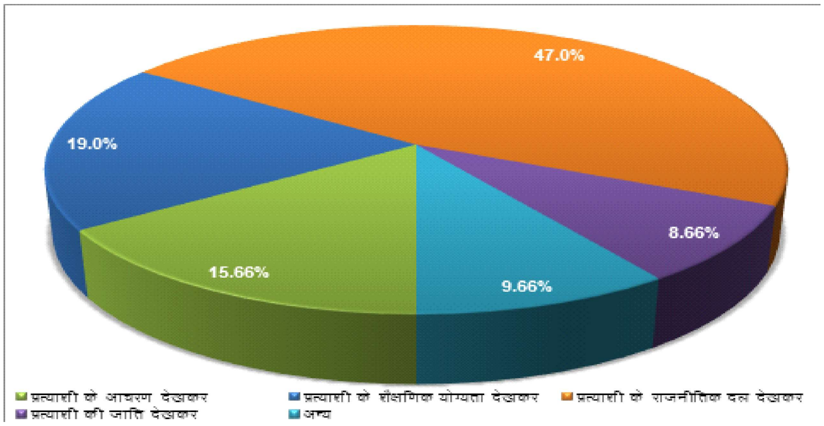

तालिका व आरेख से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र के चयनित उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 47.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जानकारी दिए हैं कि वे प्रत्याशियों के राजनीतिक दलों की छाप देखकर मतदान करते हैं। वहीं 19.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने प्रत्याशियों के शैक्षणिक स्थिति, 15.66 प्रतिशत उत्तरदाता प्रत्याशियों के आचरण देखकर अपना वोट निर्धारित करने की जानकारी दिए हैं। 8.66 प्रतिशत उत्तरदाता प्रत्याशियों की जाति देखकर व 9.66 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य विभिन्न

कारणों से प्रत्याशियों के प्रति अपना विचार रखते हैं। अन्य विभिन्न कारणों जैसे व्यक्तिगत संबंध, स्थानीय विकास कार्य, पारिवारिक प्रभाव, आर्थिक स्थिति अथवा क्षेत्रीय मुद्दों के आधार पर प्रत्याषियों के प्रति अपना मत निर्धारित करने की जानकारी दी है। उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि मतदान व्यवहार को राजनीतिक दल, षिक्षा, आचरण, जातीय आधार एवं अन्य सामाजिक–आर्थिक कारक विभिन्न स्तरों पर प्रभावित करते हैं।

तालिका–03 : प्रत्याशियों द्वारा मतदाताओं को प्रलोभन

क्र.	अभिमत	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	165	55.0
2.	नहीं	47	15.66
3.	कभी–कभी	53	17.66
4.	तटस्थ	35	11.66
योग		300	100

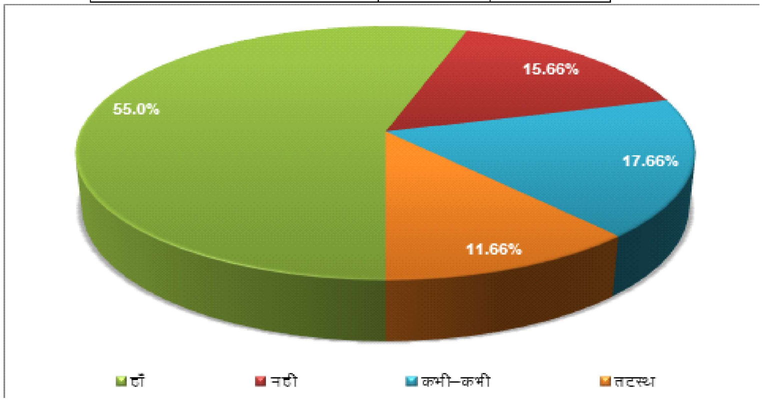

तालिका व आरेख से स्पष्ट होता है अध्ययन क्षेत्र के चयनित उत्तरदाताओं से सर्वाधिक 55.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जानकारी दिए हैं कि चुनाव के समय प्रत्याशियों द्वारा मतदाताओं को अनेक प्रकार से प्रलोभन देते हैं। 17.66 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने प्रत्याशियों द्वारा कभी–कभी ही प्रलोभन देने की बात स्वीकार किए हैं, जबकि 15.66 प्रतिशत उत्तरदाता प्रत्याशियों द्वारा मतदाताओं को प्रलोभन नहीं दिए जाने की बात कहे हैं। वहीं 11.66 प्रतिशत उत्तरदाता उक्त विचार से तटस्थ है। उत्तरदाताओं से विचार–विमर्श से ज्ञात हुआ कि चुनाव के समय प्रत्याषियों द्वारा मतदाताओं को विभिन्न प्रकार से लुभाने का प्रयास करते हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि चुनावी प्रक्रिया में मतदाताओं को प्रभावित करने हेतु धन, उपहार, भोजन, वस्त्र अथवा अन्य सुविधाओं का प्रयोग किया जाता है। प्रत्याषी चुनाव में विजय प्राप्त करने तथा अधिकाधिक मत अर्जित करने के उद्देष्य से इस प्रकार की गतिविधियों का सहारा लेते हैं। यह स्थिति लोकतांत्रिक मूल्यों एवं निश्पक्ष चुनाव व्यवस्था के लिए चुनौतीपूर्ण मानी जा सकती है, क्योंकि इससे मतदाताओं की स्वतंत्र एवं निश्पक्ष निर्णय क्षमता प्रभावित होती है। कभी–कभी ही प्रलोभन देते हैं। इससे यह स्पश्ट होता है कि सभी क्षेत्रों एवं सभी

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.043

प्रत्याषियों में यह प्रवषत्ति समान रूप से नहीं पाई जाती। कुछ प्रत्याषी विकास कार्यों एवं जनहित के मुद्दों के आधार पर मतदाताओं का समर्थन प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। इसके अतिरिक्त मतदाताओं की बढ़ती जागरूकता भी इस प्रवषत्ति को सीमित करने में सहायक सिद्ध हो रही है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में छत्तीसगढ़ राज्य में सम्पन्न हुए 2018 व 2023 के बेमेतरा जिले के तीन विधानसभा चुनाव का राजनीतिक विश्लेषण किया गया है। जिससे यह प्राप्त हुआ कि पूर्व की अपेक्षा मतदाता अधिक शिक्षित व जागरूक हो हुए हैं, किन्तु आज भी अधिकांश मतदाता अपना वोट किसी विशेष राजनीतिक दलों की छाप देखकर, जाति व धर्म के नाम पर मतदान व्यवहार देखा जा सकता है। सभी प्रत्याशी चुनाव जितने के लिए मतदाताओं को चुनाव पूर्ण प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष प्रलोभन (साड़ी, मांस–मदिरा, रूपया–पैसा इत्यादि) तथा किसी जातिगत संगठन को चुनाव जितने पर जातिगत संगठन को पैसा, भवन निर्माण के लिए भवन इत्यादि प्रकार से प्रलोभन देते हैं।

संदर्भ

1. एल्डर्सवेल्ड, एस. जे. (1981). थियरी एण्ड मेथड इन वोटिंग विहेवियर रिसर्च. द जर्नल ऑफ़ पॉलिटिक्स, 13(1), पृ0सं0–**70–87**.
2. हकफेल्ड, आर., एवं स्प्रेग, जे. (1993). सिटिजंस, कांटेक्ट्स एण्ड पॉलिटिक्स. ए. डब्ल्यू. फिनीफर (सम्पा), पॉलिटिकल साइंस : द स्टेट ऑफ़ द डिसीप्लीन II (पृ0सं0–**281–319**). वाषिंगटन, डी.सी : अमेरिकन पॉलिटिकल साइंस एसोसिएषन.
3. हिम्मेलवेट, एच.टी., जर्गर, एम. एण्ड स्टॉकडेल, जे. (1978). मेमॅरी फॉर पास्ट वोट : इम्प्लीकेशन्स ऑफ अ स्टडी ऑफ वायस इन रिकॉल, ब्रिटिश जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 8(4).
4. जॉनसन, एम., एवं अन्य. (1999). कॉन्टेक्सचुअल डेटा एण्ड द स्टडी ऑफ़ इलेक्षंस एण्ड वोटिंग बिहेवियर : कनेक्टिंग इंडीविजुअल्स टू इनवायरोमेन्ट्स. http://www.indiana.edu/~workshop/ paper/stein.pdf
5. कर्टिस, जे. (2000). द फ्यूचर ऑफ इलेक्शन स्टडीज़ : मिड लाइफ क्राइसिस एण्ड न्यू यूथ? वर्किंग पेपर, पृ0सं0–**78**.
6. कुमारी, एन. (2023). ''भारत में मतदान व्यवहार का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण'' शिक्षण संशोधन : जर्नल ऑफ आर्ट्स, ह्युमेनिटिज़ एण्ड सोशल साइंस, 6(6), पृ0सं0–**19–26**.
7. कुमारी, एम. (2017). ''भारत में चुनाव एवं मतदान व्यवहार'' श्रष्खला–एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका. 5(4), पृ0सं0–**124–127**.
8. कुमार, एस. (2013). ''भारत में मतदान व्यवहार : अध्ययन का इतिहास और उभरती चुनौतियाँ'' प्रतिमान, समय, समाज संस्कषति, 1(1) पृ0सं0–**321–345**. https://anuvadasampada.azimpremjiuniversity.edu.in/ 3070/1/

9. खीचड़, एम. (2026). राजस्थान की राजनीतिक एवं मतदान व्यवहार, जर्नल ऑफ एडवांस इन डेवलपमेंटल रिसर्च, 17(1), पृ0सं0–**1–6**.
10. मंडल, एल. के. (2023). ''भारत में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन'' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 11(3), पृ0सं0–**23–29**.
11. रिपोर्ट, जिला सांख्यिकी पुस्तिका, बेमेतरा, जिला–बेमेतरा (छ.ग.)
12. रिपोर्ट, जिला निर्वाचन कार्यालय, जिला–बेमेतरा (छ.ग.)